प्रवासी हिन्दी साहित्य और सुदर्शन प्रियदर्शिनी

प्रो. प्रदीप श्रीधर
डॉ. शिखा श्रीधर

Scanned by CamScanner

27. सुदर्शन प्रियदर्शिनी का काव्य संसार 191
कु. संध्या
28. प्रवासी हिंदी साहित्य : अवधारणा एवं स्वरूप 194
कामिनी कौशल
29. प्रवासी हिन्दी साहित्यकार और हिन्दी साहित्य 201
प्रेम किशोर
30. सुदर्शन प्रियदर्शिनी की कहानियों में मानवीय संबंधों का द्वन्द्व (उत्तरायण कहानी संग्रह के विशेष संदर्भ में) 206
अनिल कुमार
31. प्रवासी हिन्दी साहित्य : अवधारणा एवं स्वरूप 212
अनीता वर्मा
32. सुदर्शन प्रियदर्शिनी की कहानियों में संवेदनाविहीन समाज और व्यक्ति की पहचान का प्रश्न 216
कपिल कुमार गौतम
33. गिरमिटिया देशों में हिन्दी : दशा और दिशा 220
कमलेश कुमार यादव
34. प्रवासी साहित्य : स्वरूप और विश्लेषण 225
सुप्रिया इ.
35. सुदर्शन प्रियदर्शिनी का काव्य संसार 227
प्रीति सिंह
36. प्रवासी साहित्यकार सुदर्शन प्रियदर्शिनी के उपन्यास 'रेत के घर' में मानवीय संवेदना 230
शालू
37. प्रवासी हिन्दी साहित्य - वैश्विक स्तर पर हिन्दी भाषा के विकास का सोपान 235
आदित्य प्रताप सिंह
डॉ. अनुसुईया अग्रवाल
38. डॉ० सुदर्शन प्रियदर्शिनी : रचनाएँ एवं व्यक्तित्व 240
डॉ. सोमलता सिंह
39. सुदर्शन प्रियदर्शिनी कृत 'सुबह' कहानी में सुबह की नवीन किरण 244
अमित कुमार गुप्ता
40. प्रवासी हिन्दी साहित्य : अवधारणा एवं स्वरूप 247
रन्जू सिंह

Scanned by CamScanner

34

प्रवासी साहित्य : स्वरूप और विश्लेषण

-सुप्रिया इ.

प्रवासी वे लोग है जो अपना देश जोड़कर अन्य देश अनिश्चित समय के लिए जाते हैं पर दूसरे देश में बस जाने का फैसला लेते हैं। प्रवासी की स्थिति अनिश्चित होती है। वह प्राप्ति करने के पश्चात वापिस लौटने का फैसला भी कर सकता है। प्रवासी शब्द से भाव उस व्यक्ति से है जो किसी देश में निवास करता है।

भारतीयों ने बीसवीं सदी के आरंभ में रोजगार और अधिक आर्थिक साधनों की खातिर इस रुचि को अपनाया और यूरोपीय और अमरीकी महाद्वीपों में प्रवेश किया। इस समय के दौरानभारतीयों ने थाईलैंड, न्यूजीलैंड आदि देशों को अपनाया पहले प्रवास करनेवाले लोग कम पढ़े-लिखे थे। धीरे-धीरे जिन लोगों ने प्रवास किया उनमें विद्यार्थी, वकील आदि थे। प्रवास शब्द उन लोगों के लिए पर्याप्त शब्द है जो लोग मजबूरी वश अपने रोजगार की तलाश या आर्थिक लाभ के लिए अपने देश से बाहर विदेश में गए। इस प्रकार प्रवासी वह व्यक्ति है जो रोजी-रोटी, आर्थिक साधनों को प्राप्त करने के लिए परिवार के उज्वल भविष्य के लिए अपनी देश को छोड़कर किसी दूसरे देश में जाकर स्थापित हो जाता है। प्रवास अपनी इच्छा से किया जाता है।

आदिकाल से ही मनुष्य व्यवसाय और सुखी जीवन की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान जाता रहता है। वर्तमान समय में प्रवास मानव के एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनते जा रहा है। हर प्रवासी की जिंदगी और इच्छाएं दूसरे प्रवासी से बिल्कुल भिन्न होता है। सबका पारिवारिक, आर्थिक, शैक्षणिक अवस्था भी भिन्न होता है। प्राचीनकाल में सन्यासी, फकीर आदि लोग ज्ञान प्राप्ति के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान तक भ्रमण करते थे। आज भारतीय विदेशों में इतनी उन्नति कर चुकी हैं कि उनका अपना एक प्रवासी समाज निर्मित हो चुका है।

प्रवासी हिंदी साहित्य जगत में एक नया वाक्यांश है। कुछ वर्षों से प्रवासी साहित्य तथा साहित्यकारों को केंद्र में रखकर विचार-विमर्श जारी है। अनेक लोग इस संकल्पना से परिचित नहीं है। प्रवासी हिंदी साहित्य के अंतर्गत कविताएँ,

Scanned by CamScanner

उपन्यास, कहानियाँ, नाटक आदि का सृजन हुआ है। इन साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं द्वारा नीति-मूल्य, इतिहास, सभ्यता आदि के माध्यम से भारतीयता को सुरक्षित रखा है। प्रवासी लेखक नए परिवेश को ग्रहण करता है। प्रवासी के जीवन में परिवेश बदलने से विषमताएँ आती है। इन स्थलों में बसे हिंदी लेखक इन परिस्थितयों और विषमताओं को अपनी रचना का विषय बनाते है। इनके द्वारा रचित साहित्य प्रवासी साहित्य कहा जाता है। आज विदेशों में रहनेवाले भारतीय लेखक प्रवासी जीवन के विभिन्न पहलुओं को अपने रचना द्वारा प्रस्तुत कर रहे हैं। प्रवासी साहित्यकारों को अनेक समस्याओं को सम्मन करना पड़ा। भारतीय प्रवासी नारी की स्थिति का चित्रण किया है। भारतीय प्रवासी लेखक के सामने नारी की दशा, रंगभेद की समस्या आदि अनेक समस्याएं सामने आ रही है। ''प्रवासी साहित्य में भारतीयों की प्रत्येक समस्या को किसी न किसी रूप में प्रस्तुत किया गया है। प्रवासी साहित्यकार इन समस्याओं को कहीं भावुक होकर और कहीं यथार्थ रूप में प्रस्तुत करते है परंतु समस्याओं का हल कम ही प्रवासी साहित्यकारों ने प्रस्तुत किया है।''[11] हमारे देश के लिए यह गौरव की बात है कि अमेरिका, कैनेडा, इंग्लैंड आदि देशों में भारतीय लेखकों द्वारा साहित्य रचना की जा रही है। इन साहित्य को प्रकाशित करने के लिए अनेक समस्याएँ है फिर भी यह कार्य प्रगति पर है। आज प्रवासी साहित्य विदेशों में अपना एक विशेष स्थान बना चुका है।

'रामचरित' के माध्यम से मॉरिशस में हिंदी का बीजारोपण हुआ है। मॉरिशस का प्रथम हिंदी लेखक 'पंडित आत्माराम' को माना जाता है। 'मॉरिशस का इतिहास' इनका पहला किताब है। 'अभिमन्यु' मॉरिशस का प्रमुख कहानीकार है। 'खामोशी के चीत्कार, इन्सान, मशीन' आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। 'कृष्णलाल बिहारी' प्रमुख उपन्यास है। इनका उपन्यास है 'पहला कदम'। 'मणिलाल, लक्ष्मानारायण चतुर्वेदी, जदुनंदन' आदि अन्य साहित्यकार हैं।

श्रीमतभागवतगीत, शाकुंतलम आदि का अनुवाद इंगलैंड के विद्वानों ने ही किया। इंग्लैंड से अभी तक हिंदी के केवल चार ही उपन्यास प्रकाश में आए हैं। 'रिश्तों का बंधन, सोन मधली' आदि हैं। इंग्लैंड में हिंदी से अंग्रेजी में अनुवाद भी हुआ है। इंगलैंड में बहुत सारे संस्थाएं भी है जैसे बातायन, हिंदी भाषा समिति आदि।

उपर्युक्त बातों से ये बात पता चलता है कि प्रवास की प्रक्रिया बहुत पहले से आरंभ किया था। पहले अशिक्षित और कम शिक्षित लोग ही विदेश जाते थे लेकिन अब शिक्षित वर्ग अपनी इच्छाओं को पूरी करने के लिए प्रवास

सहायक प्राध्यापिका
हिन्दी विभाग, फातिमा कॉलेज, मदुरै।

Scanned by CamScanner

ISBN : 978-93-83144-35-8

पुस्तक	:	**प्रवासी हिन्दी साहित्य और सुदर्शन प्रियदर्शिनी**
संपादक	:	प्रो. प्रदीप श्रीधर, डॉ. शिखा श्रीधर
©	:	संपादकाधीन
प्रकाशक	:	शुभम् पब्लिकेशन 3ए-128, प्रथम तल, हंसपुरम्, कानपुर-208021 (उ.प्र.) सम्पर्क :09452971407, 09792402100 Email : shubhampublicationsknp@gmail.com Website : www.shubhampublications.com
संस्करण	:	**प्रथम, 2018**
शब्द-सज्जा	:	रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर
मूल्य	:	750.00 रुपये
मुद्रण	:	नई दिल्ली

Pravasi Hindi Sahitya Aur Sudarshan Priyadarshini
Editor : *Prof. Pradeep Sridhar, Dr. Shikha Sridhar*
Price : Seven Hundred Fifty Only.

Scanned by CamScanner